विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्षः 7 | अंकः 28 | दिसंबर, 2014

विश्व हिंदी सचिवालय शासी परिषद के नए सदस्य

माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन

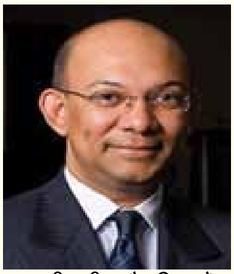

माननीय श्री एच्यैन सिनातोंबु

माननीय श्री सांताराम बाबू

विश्व हिंदी सचिवालय भारत सरकार व मॉरीशस सरकार की द्विपक्षीय संस्था है। विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद में मॉरीशस की ओर से विदेश मंत्री, शिक्षा मंत्री व संस्कृति मंत्री सदस्य होते हैं। मॉरीशस में 12 नवंबर, 2014 को घोषित आम चुनावों के परिणाम स्वरूप बनी नई सरकार व मंत्रीमंडल में माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन-लछुमन, शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीय श्री एच्यैन सिनातोंबु, विदेश, क्षेत्रीय एकीकरण और अंतरराष्ट्रीय व्यापार मंत्री तथा माननीय श्री सांताराम बाबू,कला एवं संस्कृति मंत्री बने।

विश्व हिंदी सचिवालय व विश्व हिंदी समुदाय की ओर से मॉरीशस गणराज्य के नए प्रधान मंत्री माननीय सर अनिरुद्ध जगन्नाथ, जी.सी.एस.के., के.सी.एम.जी., क्यू.सी. तथा शासी परिषद के नए सदस्यों को हार्दिक बधाई व अभिवादन।

अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन, मास्को

महामहिम श्री पी.एस. राघवन, रूसी फ़ेडरेशन में भारत के राजदूत

13 से 15 अक्टूबर, 2014 तक भारतीय दूतावास, मास्को के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र द्वारा भारत के विदेश मंत्रालय के सहयोग से मास्को में एक अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया यह आयोजन रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय में किया गया था जिसमें रूस और यूरेशिया के देशों के हिंदी-विद्वानों और हिंदी-विशेषज्ञों ने भाग लिया। इस तीन दिवसीय सम्मेलन में हिंदी भाषा के अध्ययन और अध्यापन तथा संस्कृति, समाज, सिनेमा, तकनीक और अनुवाद के क्षेत्र में हिंदी की भूमिका तथा रूस और यूरेशियाई देशों में हिंदी के विकास और उससे जुड़ी समस्याओं की चर्चा की गई।

अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन, मॉरीशस

मॉरीशस सरकार व भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय तथा देश की हिंदी शैक्षणिक व प्रचारक संस्थाओं के सहयोग से 29 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2014 तक मॉरीशस में एक अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन का सफ़ल आयोजन किया गया। सम्मेलन का विषय "प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार: अंतरराष्ट्रीय सहयोग व संभावनाएँ" रहा। सम्मेलन में प्रवासी व नवप्रवासी देशों से आए तथा मॉरीशस से लगभग 150 विद्वानों ने भाग लिया

शेष पृ. 2-3, 12

हिंदी के लिए गूगल का नया मंच

इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के कंटेंट को बढ़ावा देने के लिए गूगल ने एक ऐसा मंच तैयार किया है जो हिंदी वेबसाइट्स का अड्डा होगा। इसके लिए गूगल ने 'भारतीय भाषा इंटरनेट गठबंधन' का ऐलान किया है जो वेब पर हिंदी कंटेंट मुहैया कराएगा। गूगल के कंटेंट पार्टनर में हिंदी के कई अखबार और समाचार चैनलों के अलावा सरकारी एजेंसियाँ शामिल हैं।

शेष पृ. 4

केदारनाथ सिंह व प्रह्लाद रामशरण हुए सम्मानित

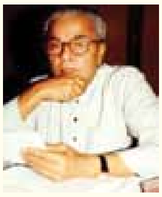

10 नवंबर 2014 को राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने मशहूर हिंदी कवि केदारनाथ सिंह को भारतीय साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया।

7 दिसंबर, 2014 को इन्द्रधनुष सांस्कृतिक परिषद, मॉरीशस के अध्यक्ष व प्रसिद्ध मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकार श्री प्रह्लाद रामशरण को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान प्रदान किया गया।

शेष पृ. 8

आगे पढ़ें :

- लखनऊ में नवगीत परिसंवाद 2014 — पृ. 5
- कनाडा में हिंदी राइटर्स गिल्ड का छठा वार्षिकोत्सव — पृ. 6
- ब्रिटेन में कवि-सम्मेलन और लोकार्पण — पृ. 6
- कर्नाटक में अद्यतन जनसंचार माध्यम पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी — पृ. 6
- ब्रिटेन की दिव्या माथुर के उपन्यास 'शाम भर बातें' का लोकार्पण — पृ. 9

ISSN 1694-2485

अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन, मॉरीशस

महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, जी.सी.एस.के, जी.ओ.एस.के.

मॉरीशस सरकार व भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय तथा देश की हिंदी शैक्षणिक व प्रचारक संस्थाओं, हिंदी स्पीकिंग यूनियन, महात्मा गांधी संस्थान, आर्य सभा मॉरीशस, ऋषि दयानन्द इन्स्टिट्यूट, हिंदी प्रचारिणी सभा तथा सरकारी हिंदी शिक्षक संघ के सहयोग से 29 अक्टूबर से 1 नवम्बर, 2014 तक मॉरीशस में अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन का सफ़ल आयोजन किया गया।

2014, मॉरीशस में गिरमिटिया मज़दूरों के आगमन की 180वीं वर्षगांठ का वर्ष है। इसी ऐतिहासिक घटना को केंद्र में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन का मुख्य विषय ''प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार: अंतरराष्ट्रीय सहयोग व संभावनाएँ'' रखा गया। सम्मेलन का आयोजन जोहान्सबर्ग में लगे 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन के मंतव्य 4viii के कार्यान्वयन स्वरूप किया गया जिससे कि विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रसार में आने वाली कठिनाइयों का समाधान खोजा जा सके।

सम्मेलन का लक्ष्य प्रवासी देशों में हिंदी की समग्र स्थिति व संयुक्त कार्रवाई की संभावनाओं के आकलन के माध्यम से इन देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार में संलग्न संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय व सहयोग स्थापित करना रहा।

सम्मेलन के प्रतिभागियों को स्मृतिचिह्न प्रस्तुति

सम्मेलन में फिजी, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, गयाना, न्यू ज़ीलैंड, सूरीनाम, अमेरिका, भारत, यू.के., नीदरलैंड, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों के लगभग 30 हिंदी सेवी, अध्यापक, भाषाविद, लेखक-साहित्यकार आदि उपस्थित रहे तथा मॉरीशस से लगभग 100 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

उद्घाटन समारोह (29 अक्टूबर, 2014)

29 अक्टूबर को सम्मेलन का औपचारिक उद्घाटन इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में हुआ। अवसर पर मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, जी.सी.एस.के, जी.ओ.एस.के. मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। माननीय डॉ. श्री वसंत कुमार बनवारी, पूर्व शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री, भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल व माननीय श्री मुखेश्वर चूनी, जी.ओ.एस.के., पूर्व कला व संस्कृति मंत्री ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई ।

महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग ने अपने वक्तव्य में कहा ''डायास्पोरा देशों में हिंदी शिक्षण और प्रचार के लिए आपसी सहयोग का एक पुल स्थापित करने के मक्सद से आयोजित इस सम्मेलन के बारे में जब मुझे पता चला तो मेरा माथा गर्व से ऊँचा हो गया। मुझे लगा हम लोग न केवल मॉरीशस की भूमि पर बल्कि सभी आप्रवासी देशों में कठिन समय में अपनी निष्ठा के बल पर अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित रखने वाले अपने पूर्वजों को इससे बेहतर कोई श्रद्धांजलि नहीं दे सकते थे।''

माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने अपने वक्तव्य में कहा ''हिंदी भाषा और हिंदी शिक्षण इस देश में विशेष महत्व रखते हैं। इस देश के इतिहास के हर पन्ने पर हिंदी भाषा और उसके सेवकों के योगदान की कहानी लिखी हुई है। और केवल इतिहास ही नहीं हिंदी इस देश के वर्तमान और भविष्य की अहम भाषा है।''

महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल तथा माननीय श्री मुखेश्वर चूनी ने अपने वक्तव्यों में सचिवालय के कार्यों की सराहना करते हुए सम्मेलन के लिए शुभकामनाएँ व्यक्त कीं।

'कमर में धोतिया' व 'धरती अम्बर' गीत प्रस्तुति

कार्यक्रम का शुभारंभ विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल के स्वागत भाषण तथा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों द्वारा गणेश वंदना प्रस्तुति से हुआ। समारोह के दौरान महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों द्वारा 'कमर में धोतिया' और 'धरती अम्बर' गीत प्रस्तुति हुई। अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान द्वारा निर्मित 'गिरमिटिया' गीत संकलन का लोकार्पण भी हुआ। कार्यक्रम का समापन विदेशी प्रतिभागियों को स्मृतिचिह्न भेंटकर तथा 'वंदे मातरम' नृत्य प्रदर्शिनी से हुआ। बीज वक्तव्य प्रतिभागी के साथ-साथ मॉरीशस के सैंकड़ों हिंदी प्रेमी ने उत्साहपूर्वक समारोह में भाग लिया।

गणेश वंदना' नृत्य प्रस्तुति

सम्मेलन को चार सत्रों में बाँटा गया। 30 अक्टूबर को भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल के बीज वक्तव्य के साथ ही सत्रों का श्रीगणेश हुआ। मॉरीशस विश्वविद्यालय के प्रतिकुलाधिपति व परिषद अध्यक्ष, प्रो. सुदर्शन जगेसर अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

'वंदे मातरम' नृत्य प्रस्तुति

दो दिवसीय सम्मेलन (30-31 अक्टूबर, 2014)

सम्मेलन के मॉरीशसीय व विदेशी प्रतिभागी

प्रथम सत्र ***मॉरीशस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण*** विषय पर आधारित रहा। अध्यक्षता यॉर्क विश्वविद्यालय के भाषा एवं भाषा विज्ञान विभाग के मानद निदेशक, प्रो. महेंद्र किशोर वर्मा ने की। श्री सत्यदेव टेंगर ने मॉरीशस में प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण तथा श्री लक्ष्मी ठाकुरी ने मॉरीशस में माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण पर आधारित लेख प्रस्तुत किए व प्रश्नोत्तर के साथ ही प्रथम सत्र का समापन हुआ।

द्वितीय सत्र का विषय ***पूर्वी एशिया व प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में हिंदी*** रहा जिसमें श्रीमती मनीषा रामरखा (फीजी), सुश्री उदीची पाण्डेय (सिंगापुर) तथा श्रीमती सुनीता नारायण (न्यू ज़ीलैंड) ने भाग लेते हुए अपने-अपने देश में हिंदी की स्थिति पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। साथ ही श्रीमती माला मेहता ने ऑस्ट्रेलिया से वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग द्वारा सत्र में भाग लेते हुए ऑस्ट्रेलिया में हिंदी पर अपने विचार प्रस्तुत किए। विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य, श्री सत्यदेव टेंगर ने सत्र की अध्यक्षता की।

तृतीय सत्र ***अफ़्रीका तथा हिंद महासागरीय क्षेत्र में हिंदी*** विषय पर आधारित था। श्री संत कुमार राय (उपाध्यक्ष, हिंदी सोसायटी सिंगापुर) ने सत्र की अध्यक्षता की। श्रीमती मालती रामबली व श्री हीरालाल शिवनाथ, श्री रमणीक चीतू, डॉ. राजरानी गोबिन तथा डॉ. संयुक्ता भुवन रामसारा ने अपने लेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र ***दक्षिण अमेरिका क्षेत्र में हिंदी*** विषय पर आधारित था। अध्यक्षता प्रो. रेशमी रामधोनी ने की। श्रीमती मालती रामबली (डरबन, दक्षिण अफ़्रीका) व श्री हीरालाल शिवनाथ (गौटेंग, दक्षिण अफ़्रीका), श्री रमणीक चीतू (रॉड्रिग्स), डॉ. राजरानी गोबिन (मॉरीशस) तथा डॉ. संयुक्ता भुवन रामसारा (मॉरीशस) ने अपने-अपने लेख प्रस्तुत किए।

31 अक्टूबर, 2014 को सम्मेलन के द्वितीय दिवस का प्रथम सत्र ***मॉरीशस में तृतीयक स्तर पर हिंदी शिक्षण एवं शोध व प्रकाशन*** पर आधारित रहा जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति, श्री चित्तरंजन मिश्र ने की। महात्मा गांधी संस्थान (मॉरीशस) के प्राध्यापकगण, डॉ. अलका धनपत, डॉ. माधुरी रामधारी व श्री राज हीरामन द्वारा प्रस्तुतियाँ हुईं। अंत में श्री कुमारदत्त गुदारी (मॉरीशस) ने प्राथमिक, माध्यमिक व स्नातक स्तर पर हिंदी शिक्षण में आई.सी.टी. और आधुनिक शैक्षणिक प्रविधियों का समावेश विषय पर लेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र का मूल विषय ***ग़ैर-सरकारी, अर्ध-सरकारी व स्वयं सेवी संस्थानों द्वारा हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार*** रहा। सत्र में श्री यंतुदेव बुधु, डॉ. उदय नारायण गंगू, श्री देवभरत सीरतन तथा श्री राजनारायण गति ने भाग लिया। सत्र की अध्यक्षा श्रीमती सुनीता नारायण, समन्वयक, वेलिंग्टन हिंदी पाठशाला, न्यू ज़ीलैंड रहीं।

तृतीय सत्र डॉ. विनोद बाला अरुण की अध्यक्षता में ***यूरोप एवं अमेरिका में हिंदी*** विषय पर चला जिसमें प्रो. महेन्द्र किशोर वर्मा (यू.के.) व श्री अशोक ओझा (अमेरिका) ने भाग लिया। इस सत्र में श्री रत्नाकर नराले ने कनाडा से तथा श्री नारायण मथुरा ने नीडरलैंड से वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग द्वारा भाग लिया।

चतुर्थ सत्र का मूल विषय ***विश्व में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार: भारतीय संस्थाओं की भूमिका व योगदान*** रहा जिसकी अध्यक्षता सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य श्री अजामिल माताबदल ने की। प्रो. चित्तरंजन मिश्र, प्रतिकुलपति महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (वर्धा), श्रीमती सुनीति शर्मा, उप सचिव (हिंदी) विदेश मंत्रालय, भारत सरकार तथा डॉ. संजीव कुमार शर्मा, आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय एवं प्रमुख सलाहकार, गुजरात विश्वविद्यालय

गोलमेज़ बैठक (1 नवंबर, 2014)

शनिवार, 1 नवंबर को गोलमेज़ बैठक लगी। कार्यक्रम का आरंभ श्री केसन बधु, मुख्य प्रतिवेदक की दो दिवसीय सम्मेलन की रिपोर्ट से हुई। दो बैठकों में गिरमिटिया प्रवासी देशों के विशेष संदर्भ में हिंदी शिक्षण व प्रचार कार्यों का पुन:स्थापन तथा सुदृढ़ीकरण पर प्रस्तुतियाँ हुईं।

सम्मेलन में विशेष रूप से मुख्य प्रतिवेदक श्री केसन बधु के साथ 14 अन्य प्रतिवेदकों ने पूरे सम्मेलन का ब्योरा तैयार किया।

समापन सत्र

गोलमेज़ बैठक के समापन के साथ ही सम्मेलन का समापन समारोह रखा गया। समापन सत्र के विशेष अतिथि भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल, महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक श्री बिजय मधु, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के महानिदेशक श्री सतीश मेहता तथा ऋषि दयानंद संस्थान के डीन डॉ. उदय नारायण गंगू रहे।

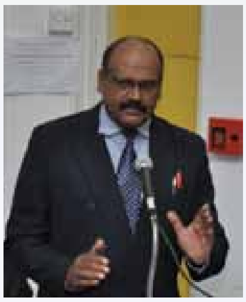

अवसर पर महामहिम भारतीय उच्चायुक्त तथा श्री सतीश मेहता ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता महामहिम भारतीय उच्चायुक्त ने किया। इस सत्र में दो गोलमेज़ सत्रों का प्रतिवेदन श्री केसन बधु द्वारा प्रस्तुत किया गया तथा डॉ. उदय नारायण गंगू द्वारा सम्मेलन के मंतव्य पढ़े गए। सम्मेलन में पारित मंतव्य पृ. 12 पर प्रस्तुत किया जा रहा है। विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही सम्मेलन संपन्न हुआ।

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा दो दिवसीय सम्मेलन में विद्वानों द्वारा प्रस्तुत शोध पत्रों को एक स्मारिका रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

अन्य गतिविधियाँ:

अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन के आयोजन के अंतराल में ही मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्रालय के सौजन्य से भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन द्वारा एक अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया था। विश्व हिंदी सचिवालय तथा हिंदी सम्मेलन के प्रतिभागियों ने 30 अक्टूबर को आयोजित भोजपुरी सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में अपनी प्रतिभागिता दी। 31 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन तथा भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आयोजकों द्वारा संयुक्त रूप से प्रवासी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें दोनों सम्मेलनों के प्रतिभागियों के साथ-साथ मॉरीशस के कई हिंदी व भोजपुरी विद्वान व कवियों ने भाग लिया। 2 नवंबर को गिरमिटिया मज़दूरों के आगमन की 180वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आप्रवासी घाट में एक भव्य स्मरणोत्सव का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि, भारत गणराज्य की विदेश मंत्री, माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज रहीं। सम्मेलन के प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भी रुचि के साथ भाग लिया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

मास्को में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र द्वारा वक्तव्य

13 से 15 अक्टूबर, 2014 तक मास्को में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें रूस और यूरेशिया के देशों के हिंदी-विद्वानों और हिंदी-विशेषज्ञों ने भाग लिया। भारत के विदेश मंत्रालय के सहयोग से इस सम्मेलन का आयोजन मास्को स्थित भारतीय दूतावास के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र ने रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय, मास्को में किया था। सम्मेलन में मास्को, सेण्ट-पीटर्सबर्ग, व्लदीवस्तोक और रूस के अन्य नगरों के हिंदी विद्वानों के अलावा मध्य एशिया और कोहकाफ़ क्षेत्र के देशों तथा पूर्वी यूरोपीय देशों के हिंदी विशेषज्ञों ने भी भाग लिया।

मास्को के अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय के सहकुलपति प्रोफ़ेसर अलेक्सान्दर बेज़बरादोफ़ ने भारत, उसकी संस्कृति और भारतीय भाषाओं में रूसी अध्येताओं और छात्रों की गहरी दिलचस्पी का ज़िक्र किया। रूस में भारत के राजदूत श्री पी.एस. राघवन ने रूस और इस इलाके के देशों में हिंदी भाषा और साहित्य में ली जाने वाली गहरी रुचि का विश्लेषण किया। राजदूत राघवन ने बड़ी संख्या में रूसी भाषा में किए जा रहे भारतीय साहित्य के अनुवादों, हिंदी भाषाशास्त्र में किए जाने वाले शोधों और हिंदी साहित्य में चित्रित सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन करने के लिए किए गए अनुसंधानों की ओर ध्यान आकर्षित किया। राजदूत राघवन ने हिंदी भाषा सीखने और साहित्य का अध्ययन करने की इस क्षेत्र की युवा पीढ़ी की इच्छा की सराहना की।

स्मारिका 'सहयात्रा' का लोकार्पण : बाएँ से श्री अनिल जनविजय, प्रो. गिरिश्वर मिश्र, श्रीमती सुनीति शर्मा, महामहिम श्री पी.एस. राघवन, प्रो. अलेक्सान्दर बेज़बरादोफ़

उद्घाटन समारोह में राष्ट्रीयता एकजुटता सदन के उपनिदेशक अलेक्सेई द्रोझिन, पद्मश्री अकादमीशियन येव्गेनी चेलिशेव, मास्को राजकीय विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर बरीस ज़ख़ारिन, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रोफ़ेसर गिरीश्वर मिश्र, रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर अलेक्सान्दर स्तालिआरोफ़ और भारत के विदेश मंत्रालय की उप सचिव (हिंदी) सुश्री सुनीति शर्मा ने अपने-अपने शुभकामना संदेश दिए।

मास्को के अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन में हिंदी के कवि कुँवर नारायण की कविताओं के प्रोफ़ेसर ग्युज़ेल स्त्रिलकोवा और अनस्तसीया गूरिया द्वारा रूसी भाषा में किए गए अनुवादों के संग्रह 'नीम के फूल', कवि भूपिन्दर सिंह कजला के काव्य-संग्रह 'जश्न-ए-बहारां' का विमोचन किया गया। सम्मेलन में ही प्रोफ़ेसर सुरेश शर्मा द्वारा प्रसिद्ध हिंदी फ़िल्म संगीतकार के ऊपर बनाए गए वृत्तचित्र 'खैयाम की संगीत-यात्रा' का लोकार्पण और प्रदर्शन भी किया गया। इस अवसर पर मास्को के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केन्द्र ने मास्को अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय सम्मेलन की स्मारिका 'सहयात्रा' का प्रकाशन भी किया।

इस तीन दिवसीय सम्मेलन में हिंदी भाषा के अध्ययन और अध्यापन तथा संस्कृति, समाज, सिनेमा, तकनीक और अनुवाद के क्षेत्र में हिंदी की भूमिका तथा रूस और यूरेशियाई देशों में हिंदी के विकास और उससे जुड़ी समस्याओं की चर्चा की गई। यह सम्मेलन 15 अक्टूबर, 2014 मास्को स्थित भारतीय दूतावास के प्रांगण में एक कवि-गोष्ठी के साथ संपन्न हुआ।

सम्मेलन के दौरान महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा और रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय, मास्को के बीच भारत-विद्या के क्षेत्र में पारस्परिक सहयोग करने के लिए एक समझौते पर भी हस्ताक्षर किए गए।

श्री संजय वेदी की रिपोर्ट

हिंदी के लिए गूगल का नया मंच, कई टीवी चैनल, अखबार और सरकारी एजेंसियाँ बनीं पार्टनर

दिल्ली में कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री माननीय प्रकाश जावड़ेकर

इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के कंटेंट को बढ़ावा देने के लिए गूगल ने एक ऐसा मंच तैयार किया है जो हिंदी वेबसाइट्स का अड्डा होगा। इसके लिए गूगल ने 'भारतीय भाषा इंटरनेट गठबंधन' का ऐलान किया है जो वेब पर हिंदी कंटेंट मुहैया कराएगा। गूगल के कंटेंट पार्टनर में हिंदी के कई अखबार और समाचार चैनलों के अलावा सरकारी एजेंसियाँ शामिल हैं।

अंग्रेज़ी में वॉयस सर्च उपलब्ध करा रहा गूगल ने हिंदी भाषा में भी इस सेवा को जोड़ा है। इसके अलावा तमिल, मराठी और बंगाली जैसी दूसरी भाषाएँ भी गूगल की सूची में हैं। इस मौके पर गूगल ने हिंदी में वॉयस सर्च, हिंदी की-बोर्ड का प्रदर्शन किया और वेबसाइट 'डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.हिंदीवेब.कॉम' को लॉन्च किया। इस वेब मंच पर हिंदी की तमाम वेबसाइट्स एक साथ मिलेंगी और कंटेंट उपलब्ध कराएँगी। गूगल का यह कदम उन 30 करोड़ भारतीयों को वर्ष 2017 तक इंटरनेट से जोड़ने की कोशिश है जो सिर्फ हिंदी का इस्तेमाल करते हैं।

3 नवंबर, 2014 को नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में गूगल ने इसकी घोषणा की जिसमें केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने भी हिस्सा लिया। केंद्रीय मंत्री ने कहा, ''भारतीय तकनीक को पसंद करते हैं। आज हर किसी के पास फेसबुक अकाउंट है, लेकिन इस ओर और भी बहुत कुछ किया जा सकता है। अगर तकनीक यूज़र फ्रेंडली हो तो लाखों-करोड़ों लोग इंटरनेट से जुड़ना चाहेंगे।''

मंत्री जावड़ेकर ने कहा कि ''पहले हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के लिए ऐसा कोई मंच नहीं था, लेकिन अब इस एलायंस से लोगों को एक मंच मिलेगा।''

वहीं गूगल इंडिया के उपाध्यक्ष और प्रबंध निदेशक राजन आनंदन ने कहा, ''भारत में करीब 20 करोड़ इंटरनेट यूज़र्स हैं। हर महीने मोबाइल के माध्यम से करीब 50 लाख नए यूज़र्स जुड़ रहे हैं। इस रफ्तार से भारत आगामी 12 महीनों में अमेरिका को पीछे छोड़ देगा।''

उन्होंने बताया कि देश में सिर्फ 19.8 करोड़ लोगों के ही अंग्रेज़ी में दक्ष होने का अनुमान है। इनमें से ज़्यादातर इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। इसे ध्यान में रखकर 'भारतीय भाषा इंटरनेट गठबंधन' (आइ.एल.आइ.ए.) का गठन किया गया है। आनंदन ने कहा, ''यह गठबंधन ऑनलाइन भारतीय भाषा सामग्री को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। आइ.एल.आइ.ए. को उम्मीद है कि 2017 तक भारतीय भाषा बोलने वाले 30 करोड़ लोगों को इंटरनेट से जोड़ा जाएगा।''

समाचार4मीडिया.कॉम से साभार

लखनऊ में नवगीत परिसंवाद 2014

मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

15 नवंबर, 2014 को गोमती नगर, लखनऊ के कालिन्दी विला में स्थित अभिव्यक्ति विश्वम के सभाकक्ष एवं उन्मुतांगन में नवगीत को केन्द्र में रखकर दो दिवसीय कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अवसर पर श्रद्धेय कुमार ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में नवगीत में नवता को लेकर व्याप्त भ्रम को दूर करते हुए कहा कि शब्द तथा संप्रेषणीयता के बीच तारतम्यता के न टूटने देने के प्रति आग्रही होना नवगीतकारों का दायित्व है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रद्धेय राम सेंगर ने कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाएँ युवा रचनाकारों के रचनात्मक व्यक्तित्व के विकास तथा उनमें नवगीत की समझ बढ़ाने में सहायक होंगी। सत्र का सफल संचालन व्योम जी ने किया।

सत्र के दूसरे भाग में लब्धप्रतिष्ठित गीतकार डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र का 'गीत और नवगीत में अंतर' शीर्षक पर व्याख्यान हुआ। आपका कहना था कि नवगीत का प्रादुर्भाव हुआ ही इसलिए था कि एक ओर हिंदी कविता लगातार दुरूह होती जा

नवगीत संग्रहों का लोकार्पण

रही थी और दूसरी ओर हिंदी साहित्य में शब्द-प्रवाह को तिरोहित किया जाना बहुत कठिन था। अत: नवगीत नव-लय-ताल-छन्द और कथ्य के साथ सामने आया।

अवसर पर नवगीतों पर आधारित 50 पोस्टरों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन लखनऊ ललित कला महाविद्यालय के डीन पांडेय राजीव नयन द्वारा किया गया। उन्होंने भाग लेने वाले कलाकारों-पूर्णिमा वर्मन, रोहित रूसिया अमित कल्ला और विजेन्द्र विज के बनाए पोस्टरों की सराहना की, उन्मुक्तांगन में रखे हुए कैनवस पर रेखाचित्र बनाया और अपने हस्ताक्षर किये। इसके बाद उपस्थित अतिथियों और रचनाकारों ने इस कैनवस पर अपने हस्ताक्षर किये जिसे स्मृति चिह्न के रूप में सहेजा गया।

दूसरे सत्र में देश भर से आए वरिष्ठ नवगीतकारों द्वारा नवगीतों का पाठ हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष कुमार रवीन्द्र जी एवं मुख्य अतिथि राम सेंगर रहे। मंच संचालन अवनीश सिंह चौहान ने किया।

तीसरे सत्र में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन खुले आँगन में किया गया। इस सत्र में कई कार्यक्रम हुए जैसे गणपति वंदना, 'पेड़ छतनार' शीर्षक से एक नुक्कड़ नाटक का मंचन, नवगीत ''पुरवा जो डोल'' पर कथक नृत्य, नवगीतों का गायन। कार्यक्रम का अंत विजेन्द्र विज द्वारा नवगीतों पर बनाई गई फिल्मों से हुआ ।

दूसरे दिन के पहले सत्र में देश भर से गीति-काव्य के नवगीत विधा के मूर्धन्य विद्वानों ने इस विधा के वैविध्य तथा इसके शिल्प पर प्रकाश डाला। यह सत्र कार्यशाला के रूप में आयोजित हुआ जिसके अंतर्गत उद्बोधनों के बाद अन्यान्य नवगीतकारों व वक्ताओं के बीच प्रश्नोत्तर हुए।

नवगीत नवांकुर पुरस्कार

दूसरे सत्र में छः नवगीत-संग्रहों का लोकार्पण हुआ जिसके उपरान्त विभिन्न विद्वानों ने समीक्षकीय चर्चा की। सभी समीक्षकों ने नवगीत-संग्रहों के भाव तथा शिल्प पक्षों पर खुल कर अपनी बातें कहीं। सत्र का संचालन डॉ. अवनीश चौहान ने किया।

तीसरे सत्र में सभी रचनाकारों ने अपनी-अपनी रचनाओं का पाठ किया। इस वर्ष के आमंत्रित कवियों में चेक गणराज्य से पधारे डॉ. ज्देन्येक वग्नेर विशेष कवि रहे। उनके अतिरिक्त इस सत्र में अन्य कवियों ने भी अपनी रचनाओं का पाठ किया ।

गणपति वंदना

नवगीत पाठ के पूर्व अभिव्यक्ति - अनुभूति संस्था की ओर से नवगीत नवांकुर पुरस्कार का वितरण किया गया। अवनीश सिंह चौहान को उनके नवगीत संग्रह 'टुकड़ा कागज़ का' के लिए 2011 का, कल्पना रामानी को उनके नवगीत संग्रह 'हौसलों के पंख' के लिए 2012 का तथा रोहित रूसिया को उनके नवगीत संग्रह 'नदी की धार सी संवेदनाएँ' के लिए 2013 का नवगीत नवांकुर पुरस्कार दिया गया। विद्वानों द्वारा नवगीत विधा के बहुमुखी विकास की संभावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ ही 'नवगीत महोत्सव 2014' का समापन हुआ।

शशि पुरवार की रिपोर्ट

काठमाण्डू में त्रिभुवन विश्वविद्यालय द्वारा 'हिंदी साहित्य शिक्षण संगोष्ठी'

21 नवंबर, 2014 को त्रिभुवन विश्वविद्यालय के अंतर्गत केंद्रीय हिंदी विभाग के द्वारा विश्वविद्यालय परिसर स्थित शेडा के सभाकक्ष में 'हिंदी साहित्य शिक्षण संगोष्ठी' विषयक कार्यशाला संपन्न हुई जिसकी अध्यक्षता विभाग की अध्यक्षा डॉ.श्वेता दीप्ति ने की जबकी प्रमुख अतिथि के आसन को मानविकी एवं समाज शास्त्र संकाय के डीन प्रो. डॉ. चिंतामणि पोखरेल ने सुशोभित किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में कीर्तिपुर कैंपस के प्रमुख एवं हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. डॉ. सूर्यनाथ गोप, भारतीय दूतावास के डॉ. मोहन बहुगुणा एवं अन्य विशिष्टजनों की उपस्थिति थी। इस कार्यशाला में 'सामाजिक यथार्थ रचनात्मकता और कविता का संप्रेषण', 'आधुनिक काल में नवीन गद्य विधाओं का सृजनात्मक आयाम', 'विदेशों में हिंदी पठन-पाठन का आयाम' तथा 'सूचना प्रौद्योगिकी युग पर हिंदी का प्रभाव' विषयक कार्यसत्र प्रस्तुत किए गए।

श्री सच्चिदानंद मिश्र की रिपोर्ट

अद्यतन जनसंचार माध्यम पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

मुख्य अतिथि तथा विशेष अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

29 अक्टूबर, 2014 को गुलबर्गा विश्वविद्यालय से संबद्ध श्री सिद्धरामेश्वर महाविद्यालय, कमलनगर, कर्नाटक में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से 'अद्यतन जनसंचार माध्यम: साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में' विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई। संगोष्ठी का उद्‍घाटन ख्यातिलब्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. श्रीराम परिहार ने किया तथा बीज वक्तव्य दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के आचार्य डॉ. ऋषभदेव शर्मा ने दिया।

इस अवसर पर चार सत्रों के अंतर्गत क्रमश: मास मीडिया में बढ़ता बाज़ारवाद, संचार माध्यम और साहित्य की भाषायी अस्मिता, मास मीडिया और सांस्कृतिक संकट तथा मास मीडिया पर चिंतन की आवश्यकता जैसे विविध पहलुओं पर गंभीर विचार विमर्श हुआ। विभिन्न सत्रों में डॉ. वी.जी. भंडे, डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, डॉ. काशीनाथ अम्बुलगे, डॉ. अशोक कांबले, डॉ. परिमला अम्बेकर, डॉ. के.वी. बिरादार, डॉ. नरसिंह प्रसाद दुबे और डॉ. नरवीर पाटिल ने विषय प्रवर्तक और मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिया। सभी सत्रों में कर्नाटक और महाराष्ट्र के विविध अंचलों से आए हुए प्रतिभागियों ने शोधपत्र प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संयोजन प्राचार्य डॉ. वी.जी. भंडे और प्रो. नरवीर पाटिल ने किया।

डॉ. गुरमकोंडा निरजा की रिपोर्ट

ब्रिटेन में कवि-सम्मेलन और लोकार्पण

नॉटिंघम शेरिफ़, उप-उच्चायुक्त व भारतीय लेखक

19 अक्टूबर, 2014 को ब्रिटेन के नॉटिंघम नगर में द्वितीय 'फ़ेस्टिवल ऑफ़ वर्ड्स' का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत एक कवि सम्मेलन तथा एक संकलन के लोकार्पण का आयोजन भी किया गया था। इस आयोजन में एक सत्र 'दक्षिण एशियाई साहित्य' का भी होता है जिसका दायित्व 'नॉटिंघम एशियन आर्ट्स काउंसिल' के साथ वहाँ की स्थानीय संस्था 'काव्यरंग' का होता है। इस सत्र में भारतीय उच्चायोग, लंदन से उप-उच्चायुक्त, डॉ. वीरेंद्र पॉल भी उपस्थित थे।

सात दिनों तक चलने वाले इस 'फ़ेस्टिवल ऑफ़ वर्ड्स' में देश-विदेश से अनेकानेक भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्यकार समानांतर सत्रों में अपनी भागीदारी निभाते हैं। नॉटिंघम को अंग्रेज़ी साहित्य का साहित्यिक-नगर माना जाता है और यूनेस्को द्वारा इसे 'सिटी ऑफ़ लिटरेचर' के रूप में घोषित किए जाने के प्रयास चल रहे हैं। यह नगर अंग्रेज़ी के अनेकानेक श्रेष्ठ रचनाकारों का स्थल रहा है, जिनमें डी. एच. लॉरेंस, लॉर्ड बायरन आदि के नाम विशेष हैं।

'दक्षिण एशियाई साहित्य' सत्र में 'काव्यरंग' के सदस्यों की कविताओं के Colors of Poetry शीर्षक त्रिभाषी संकलन (हिंदी, पंजाबी, उर्दू व अंग्रेज़ी अनुवाद सहित) का लोकार्पण प्रमुख घटना रही। दक्षिण एशियाई कवियों का यह पहला सामूहिक व अनूदित संकलन है और इसका संपादन जया वर्मा ने किया है। डॉ. वीरेंद्र पॉल, नॉटिंगघम की शैरिफ़, काउन्सलर ज़किया ज़ुबैरी, तेजेंद्र शर्मा व व्यवसायी श्रीनाथ पुरी ने सम्मिलित रूप से इसका लोकार्पण किया। इस सत्र का संचालन डॉ. रवि महाजन ने कुशलतापूर्वक किया।

लोकार्पण के पश्चात कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अलग-अलग भाषाओं व अलग-अलग देशों के कवियों ने भाग लिया। लंदन से डॉ. कविता वाचक्नवी, तेजेंद्र शर्मा एवं ज़किया ज़ुबैरी ने इसमें भाग लिया। कवि सम्मेलन का संचालन जुगनू महाजन ने अपने चिर-परिचित अंदाज़ में निभाया। दूसरे सत्र में ग़ज़ल गायक देवदत्त जोशी ने बहादुर शाह ज़फ़र, ग़ालिब, खुसरो, फ़ैज़, गुलाम अली, अहमद फ़राज़, अमीन एवं निदा फ़ाज़ली आदि की ग़ज़लों का समाँ बाँध दिया।

डॉ. कविता वाचक्नवी की रिपोर्ट

कनाडा में हिंदी राइटर्स गिल्ड का छठा वार्षिकोत्सव

हाइकु संकलन 'अम्बर बाँचे पाती' का लोकार्पण

1 नवंबर, 2014 को कनाडा की प्रमुख हिंदी साहित्यकार संस्था हिंदी राइटर्स गिल्ड का छठा वार्षिकोत्सव बहुत धूमधाम से मिसिसागा के माजा प्रेंटिस थियेटर में मनाया गया। कार्यक्रम आरम्भ करते हुए संचालिका पूनम जैन कासलीवाल ने दर्शकों, मुख्य अतिथि काउंसल जनरल मान्यवर अखिलेश मिश्रा का स्वागत किया। उन्होंने सबसे पहले सरस्वती वंदना के लिए मानोशी चैटर्जी को आमंत्रित किया।

तदोपरांत पूनम जैन कासलीवाल ने हिंदी राइटर्स गिल्ड की पिछले वर्ष की संक्षिप्त रिपोर्ट पढ़ी। उन्होंने घोषणा की कि जिस तरह हि.रा.गि. हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी कर्मियों को सरस्वती पुरस्कार प्रदान करता है उसी तरह एक नया सम्मान आरंभ किया जा रहा है जो साहित्य-सृजन के लिए होगा। इस वर्ष का साहित्य सृजन पुरस्कार दो साहित्यकारों-महाकवि प्रो. हरिशंकर आदेश और डॉ. शिवनन्दन सिंह यादव को प्रदान किया गया। साथ ही भुवनेश्वरी पाण्डे को सरस्वती पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भारत के मान्यवर अखिलेश मिश्रा जी ने सदा की तरह विशुद्ध हिंदी में दर्शकों को संबोधित किया। उन्होंने हिंदी राइटर्स गिल्ड की प्रशंसा करते हुए छठे वार्षिकोत्सव के लिए चयनित विषय "भक्तिकालीन साहित्य" की प्रस्तुति के लिए बधाई दी।

अवसर पर हिंदी राइटर्स गिल्ड की निदेशिका श्रीमती कृष्णा वर्मा के हाइकु संकलन "अम्बर बाँचे पाती" का विमोचन किया गया। यह कनाडा से प्रकाशित होनेवाला पहला हाइकु संकलन है।

अवसर पर एक सत्र में "भक्ति नाट्य संध्या" का मंचन किया गया तथा दूसरे सत्र में काव्य पाठ हुआ।

सुमन कुमार घई की रिपोर्ट

हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा समावर्तन समारोह 2014

बाएँ से श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, श्रीमती राजलक्ष्मी रोशनी, श्री सत्यदेव प्रीतम, श्री पंकज जिंडल, श्री यन्तुदेव बुधु

6 दिसंबर 2014 को हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरिशस ने अपना 79वाँ समावर्तन समारोह हिंदी भवन के सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में भव्य रूप से मनाया। उत्सव की मुख्य अतिथि श्रीमती राजलक्ष्मी रोशनी रहीं तथा विशेष अतिथि भारतीय उच्चायुक्त के प्रथम सचिव,श्री पंकज जिंडल थे। विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, आर्य सभा मॉरीशस के उप प्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम तथा मानव सेवा निधि के प्रधान सूर्यदेव बिसेसर भी उत्सव की शोभा बढ़ा रहे थे। उपस्थित मेहमानों में भोजपुरी संगठन की अध्यक्षा डॉ. श्रीमती सरिता बुधु, वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर, डॉ. लालदेव अंचराज़, डॉ. अंजलि चिंतामणी, सभा के सदस्य, हिंदी भवन विद्यालय के शिक्षक, हिंदी प्रेमी, अभिभावक तथा छात्र रहे।

समावर्तन समारोह के अवसर पर छठी कक्षा तथा प्रवेशिका परीक्षा में प्रथम दस में स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। छात्रों के प्रोत्साहन के लिए प्रथम स्थान प्राप्त करने वालों को नकद राशि भी दी जाती है । छठी कक्षा के लिए श्रीमती सीता रामयाद पारितोषिक 1000 रुपये तथा प्रवेशिका के लिए पारितोषिक 1200 रुपये दिए गए । उसी अवसर पर हर वर्ष की भाँति हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिए श्री सत्यदेव प्रीतम तथा डॉ. श्रीमती लक्ष्मी झमन को 'हिंदी प्रचारिणी सभा सम्मान' से विभूषित किया गया ।

कार्यक्रम का आरंभ हिंदी भवन-विद्यालय के छात्रों द्वारा एक सरस्वती वंदना से हुआ । अपने स्वागत भाषण में सभा के प्रधान ने हिंदी भाषा के पठन-पाठन पर ज़ोर देते हुए अभिभावकों का ध्यान आकृष्ट किया । उन्होंने यह बताया कि भाषा को पढ़ने से हमें अपने धर्म-संस्कृति की अच्छी पहचान भी हो सकती है । प्रधान जी ने अपने वक्तव्य से छात्रों का हौसला बढ़ाया । विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने भी हिंदी भाषा के महत्व पर बात की । भारतीय उच्चायुक्त के द्वितीय सचिव श्री पंकज जिंडल ने हिंदी भाषा की सरलता तथा वैज्ञानिकता पर अच्छा वक्तव्य दिया ।

श्रीमती राजलक्ष्मी रोशनी ने सभागार में उपस्थित छात्रों को संबोधित करते हुए हिंदी भाषा को लेकर अपना अनुभव बाँटा तथा हिंदी की परीक्षा से संबंधित अपने बचपन की एक घटना भी सुनाई। इस अवसर पर सभा की सदस्या श्रीमती रोहिनी रामरूप ने सभा को हिंदी भाषा की सेवा हेतु आर्थिक अनुदान दिया। सभा के प्रधान ने उनके प्रति आभार प्रकट करते हुए बताया कि यह अनुदान अगले वर्ष से प्राथमिक पाठशाला के लिए श्रुतिलेख प्रतियोगिता के लिए प्रयुक्त होगा।

कार्यक्रम के अंत में छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री श्री धनराज शम्भु ने किया।

हिंदी भवन संदेश (हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना पत्र) से साभार

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा वर्ष 2013 के सम्मान

श्री दूधनाथ सिंह

7 दिसंबर, 2014 को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा वर्ष 2013 के सम्मानों के लिए एक समारोह आयोजित किया गया। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के वर्ष 2013 के पुरस्कारों पर निर्णय लेने हेतु गठित पुरस्कार समिति की बैठक 31 अक्टूबर 2014 को श्री उदय प्रताप सिंह, माननीय कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की अध्यक्षता में संपन्न हुई थी जिसमें सर्वसम्मति से सम्मानों/पुरस्कारों हेतु विद्वानों के नामों का चयन किया गया था।

संस्थान द्वारा प्रदत्त सम्मानों में सर्वोच्च सम्मान 'भारत भारती सम्मान' प्रख्यात साहित्यकार दूधनाथ सिंह को प्रदान किया गया। इस सम्मान के अंतर्गत 5 लाख रुपये, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

अन्य सम्मानों में श्रीमती ममता कालिया को लोहिया साहित्य सम्मान, डॉ. सुरेश गौतम को हिंदी गौरव सम्मान, श्रीमती चन्द्रकान्ता को महात्मा गांधी साहित्य सम्मान, डॉ. कन्हैया सिंह को पं. दीन दयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान, श्री लाखन सिंह भदौरिया सौमित्र को अवन्तीबाई साहित्य सम्मान, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी को राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन सम्मान दिया गया। इन पुरस्कारों के लिए प्रत्येक सम्मानित साहित्यकार को चार लाख रुपये की राशि दी गई।

श्री बैजनाथ प्रसाद शुक्ल भव्य, डॉ. राम सिंह यादव, डॉ. देवेन्द्र दीपक, श्री पुन्नी सिंह, डॉ. महावीर सरन जैन, डॉ. कुसुम खेमानी, डॉ. शंभु नाथ, सुश्री नुसरत नाहीद, श्री जमुना प्रसाद उपाध्याय, श्री विभूति नारायण राय को साहित्य भूषण सम्मान प्रदान किया गया।

श्री जगदीश पीयूष को लोक भूषण सम्मान, श्रीमती सरोजनी श्रीवास्तव को कला भूषण सम्मान, डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी को विद्या भूषण सम्मान, डॉ अशोक कुमार अग्रवाल को विज्ञान भूषण सम्मान, प्रो. राममोहन पाठक को पत्रकारिता भूषण सम्मान, श्री प्रह्लाद रामशरण (मॉरीशस) को प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान, डॉ. दिविक रमेश को बाल साहित्य भारती सम्मान दिया गया।

डॉ. गुरुशरण कौर जग्गी (पंजाबी), डॉ. रमेश यादव (मराठी), डॉ. अरिबम ब्रजकुमार शर्मा (मणिपुरी), डॉ. अजय कुमार पटनायक (उड़िया), डॉ. राम गोविन्दराजन (तमिल), डॉ. डी.एन.श्रीनाथ (कन्नड), डॉ. बीना बुदकी (कश्मीरी), श्री शकील सिद्दीकी (उर्दू), श्रीमती साधना सान्याल (बांग्ला), श्रीमती मुनुकुट्ल पद्माराव (तेलुगु), डॉ. एच. परमेश्वरन (मलयालम), डॉ. देवशंकर नवीन (मैथिली), डॉ. मागीरथ प्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' (संस्कृत) को अपने-अपने भाषा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए सौहार्द सम्मान मिला।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा (यू.एस.ए) तथा डॉ. कविता वाचक्नवी (यू.के) को हिंदी विदेश प्रसार सम्मान, डॉ. महेश आलोक तथा डॉ. सूर्यकांत को विश्वविद्यालय-स्तरीय सम्मान, श्री योगीन्द्र द्विवेदी को मधुलिमये साहित्य सम्मान, श्री प्रेम जनमेजय को पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी साहित्य सम्मान, डॉ. सुरेंद्र सहाय श्रीवास्तव को विधि भूषण सम्मान प्रदान किया गया।

इन सम्मानों के अतिरिक्त वर्ष 2013 में प्रकाशित श्रेष्ठ पुस्तकों को सर्जना पुरस्कार भी प्रदान की गई।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की प्रेस विज्ञप्ति से साभार

श्री केदारनाथ सिंह को 'ज्ञानपीठ पुरस्कार'

10 नवंबर 2014 को भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने मशहूर हिंदी कवि केदारनाथ सिंह को भारतीय साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया।

राष्ट्रपति ने कहा कि "केदारनाथ सिंह ने अपनी कविताओं के माध्यम से हमें अनुप्रास एवं काव्यात्मक गीत की दुर्लभ संगति दी है और उन्होंने वास्तविकता एवं गल्प को समानता के साथ समाहित किया है। उनकी कविताओं से अर्थ, रंग और स्वीकार्यता झलकती है।"

आगे उन्होंने कहा कि "अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी कवि न केवल आधुनिक कला सौंदर्य के प्रति संवेदनशील हैं बल्कि पारंपरिक ग्रामीण समुदायों के प्रति भी उनकी संवेदना झलकती है।"

केदारनाथ सिंह एक सम्मानित शिक्षक भी हैं जिन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया है।

राष्ट्रपति ने कहा कि उनकी इच्छा है कि नयी पीढ़ी भारतीय क्लासिक में गहराई तक उतरे। केदारनाथ सिंह को संसद के पुस्तकालय भवन स्थित बालयोगी प्रेक्षागृह में 49वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि इससे न केवल नैतिक मानदंडों को ठीक करने में मदद मिलेगी बल्कि राष्ट्र निर्माण में हमारे प्रयासों में शानदार योगदान रहेगा।

केदारनाथ सिंह हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। आपका जन्म 1934 ई. में उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले के चकिया गाँव में हुआ। आपने बनारस विश्वविद्यालय से 1956 ई. में हिंदी में एम.ए. और 1964 में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। आप जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा केंद्र में आचार्य व अध्यक्ष के रूप में कार्य कर चुके हैं। केदारनाथ सिंह जी को मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, कुमारन आशान पुरस्कार, जीवन भारती सम्मान, दिनकर पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, व्यास सम्मान आदि प्राप्त हो चुके हैं।

डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ को विश्व हिंदी शिरोमणि सारस्वत सम्मान

14 नवंबर, 2014 को हिंदी लेखक संघ, मॉरीशस के अध्यक्ष, डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ को साहित्य, संस्कृति व कला को समर्पित, कोलकाता स्थित भारतीय वांग्मय पीठ साहित्यिक संस्था द्वारा विश्व हिंदी शिरोमणि सारस्वत सम्मान (मानद उपाधि) प्रदान किया गया। यह सम्मान इन्हें अपने हिंदी-साहित्य-साधना, समर्पण एवं हिंदी साहित्य में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्राप्त हुआ। आपको दिसंबर 2013 में विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ तथा मई 2014 में अभ्युदय बहुद्देशीय संस्था द्वारा भी सम्मानित किया गया है।

इन्द्रदेव भोला मॉरीशस के वरिष्ठ बहुआयामी साहित्यकार हैं। कवि, कथाकार, निबंधकार, नाटककार, इतिहासकार तथा संपादक के रूप में आप सुप्रसिद्ध हैं। भारत, फ़िजी, नोर्वे तथा कनाडा की 15 से अधिक पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। आप मॉरीशस हिंदी लेखक संघ के मान्य प्रधान हैं। मॉरीशस के विद्या भवन के संस्थापक तथा संचालक रह चुके हैं। आप 'बाल सखा' पत्रिका के प्रधान संपादक भी रह चुके हैं। आप सरकारी स्कूल में डिप्यूटी हैड टीचर रह चुके हैं। सेवानिवृत्ति के उपरान्त भी आपने हिंदी सेवा व लेखन जारी रखा।

डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ की रिपोर्ट

श्री प्रह्लाद रामशरण को 'प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान

7 दिसंबर, 2014 को इन्द्रधनुष सांस्कृतिक परिषद, मॉरीशस के अध्यक्ष व प्रसिद्ध मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकार श्री प्रह्लाद रामशरण को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा ***प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान*** प्रदान किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान हिंदी संस्थान द्वारा प्रति वर्ष हिंदी के प्रचार में संलग्न किसी एक भारतेतर हिंदी सेवी को प्रदान किया जाता है। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा प्रदत्त भूषण सम्मानों की सूची में ममता कालिया, सुरेश गौतम, चन्द्रकान्ता, डॉ. कन्हैया सिंह, लखन सिंह भदरिया सौमित्र जैसे लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार भी हैं।

श्री प्रह्लाद रामशरण अंतरराष्ट्रीय स्तर के मूर्धन्य लेखक हैं। आपको हिंदी सेवा और साहित्य सृजन के लिए 1993 में चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर सम्मानित किया गया था। आपने वर्षों तक 'आर्योदय' पत्रिका का सह-संपादन किया। 'इन्द्रधनुष सांस्कृतिक परिषद' नामक संस्था की स्थापना करके हिंदी की अच्छी सेवा कर रहे हैं। आप 'इन्द्रधनुष' त्रैमासिक के संपादक भी हैं। 'मॉरीशस का आदि काव्य-कानन (1997)', 'मॉरीशस के मध्यकालीन काव्य प्रसून (1997)', 'मॉरीशस की लोक कथाएँ', 'अमर प्रेम', 'मॉरीशस का इतिहास', मॉरीशस का लोक साहित्य और संस्कृति', 'भारतीय वांग्मय में मॉरीशस की संस्कृति', 'मॉरीशसः भारतीय संस्कृति का हरावल दस्ता' तथा 'मॉरीशसः हिन्द महासागर में नवोदित राष्ट्र' आदि आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

प्रथम हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य पुरस्कार

20 नवंबर, 2014 को हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य न्यास द्वारा इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, लोदी गार्डन, नई दिल्ली में आयोगित एक भव्य समारोह में साहित्यकार डॉ. ज़ाकिर अली 'रजनीश' को प्रथम हरिकृष्ण देवसरे बाल साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया। पूर्व केंदीय मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने उन्हें 75 हज़ार रुपये की पुरस्कार राशि व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। यह पुरस्कार उनकी पाण्डुलिपि 'गणित का जादू तथा अन्य कहानियाँ' के लिए प्रदान किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बाल साहित्य लिखना दर्शनशास्त्र की पुस्तकें लिखने से कठिन कार्य है क्योंकि यह बच्चों की संवेदनाओं के स्तर पर उतर रचा जाता है।

इससे पूर्व साहित्य अकादमी के उप-सचिव बृजेन्द्र त्रिपाठी ने डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के कार्यों और विशेषकर साहित्य अकादेमी द्वारा उनके संपादन में प्रकाशित पुस्तकों के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा डॉ. देवसरे की अध्येतावृत्ति को विशेष रूप से रेखांकित किया।

कार्यक्रम में पधारे जाने-माने पत्रकार आलोक मेहता ने देवसरे जी के जीवन से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके भीतर प्रतीभा को परखने की अद्भुत कला थी और यह काम उन्होंने 'पराग' के माध्यम से बखूबी किया। उन्होंने कहा कि "यह प्रसन्नता का विषय है कि ट्रस्ट के द्वारा आप लोग भी बालसाहित्य की महत्वपूर्ण प्रतिभाओं को पुरस्कृत कर रहे हैं जो कि अत्यंत प्रशंसा का विषय है।"

कार्यक्रम के प्रारंभ में वरिष्ठ बालसाहित्यकार विभा देवसरे ने पुरस्कार समारोह में उपस्थित अभ्यागतों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन ट्रस्ट की न्यासी क्षिप्रा देवसरे ने किया। इस अवसर पर दिल्ली के प्रमुख साहित्यकार दिविक रमेश, बालस्वरूप राही, शेरजंग गर्ग, सुरेखा पणंदीकर, रमेश तैलंग, देवेन्द्र मेवाड़ी, बलराम अग्रवाल, देवेन्द्र कुमार देवेश, कुसुमलता सिंग आदि उपस्थित थे।

डॉ. ज़ाकीर अली 'रजनीश'

ब्रिटेन की दिव्या माथुर के उपन्यास 'शाम भर बातें' का लोकार्पण

ब्रिटेन की प्रसिद्ध लेखिका दिव्या माथुर

26 नवंबर, 2014 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर एनेक्सी, अक्षरम् और वाणी प्रकाशन के एक संयुक्त आयोजन में ब्रिटेन की लेखिका दिव्या माथुर के उपन्यास 'शाम भर बातें' का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम वातायन साहित्य संस्था-लन्दन एवं प्रवासी दुनिया के सौजन्य से संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विख्यात हिंदी लेखक, शिक्षाविद, भाषाविद एवं प्रेमचंद मर्मज्ञ, केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष, डॉ. कमल किशोर गोयन्का ने की और लोकार्पण भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक डॉ. लीलाधर मंडलोई ने। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध नाटककार और लेखक प्रो. असगर वजाहत थे। स्व. डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल भी अवसर पर उपस्थित थे। वक्ता थे डॉ. प्रेम जनमेजय, लेखक एवं व्यंगयात्रा के संपादक; अनिल जोशी, प्रवासी दुनिया के सम्पादक और लेखक; एवं अजय नावरिया, लेखक और जामिया इस्लामिया में हिंदी के प्राध्यापक। युवा अभिनेता संकल्प जोशी ने उपन्यास के अंश का नाट्य पाठ पूरे उतार-चढ़ाव के साथ किया। लेखिका अलका सिन्हा का संचालन उत्कृष्ट रहा।

लेखिका ने उपन्यास में सामाजिक, पारिवारिक जीवन, हिंदी की समस्या, नस्लवाद, संस्कृति का खोखलापन, टूटते हुए परिवार इत्यादि बहुत सी समस्याओं को उकेरा है। अभिमन्यु अनत की कहानी 'मातमपुर्सी' का ज़िक्र करते हुए डॉ. गोयन्का ने बताया कि प्रेमचंद की कहानियों में भी प्रवासी जीवन का चित्रण रहा है। 'नीली डायरी' का उद्धरण देते हुए, उन्होंने दिव्या जी की सृजनात्मक क्षमता की प्रशंसा की।

'शाम भर बातें' उपन्यास का लोकार्पण

इंडिया इन्टरनैशनल सेंटर के भरे हॉल में विदेश से आए हुए बहुत से मेहमान भी सम्मिलित थे- डॉ. अचला शर्मा, सुभाष और इंदिरा आनंद, कमला दत्त, अरुण सब्बरवाल, जय और महीपाल वर्मा एवं जय विश्वादेवा। विशिष्ट अतिथियों में शामिल थे श्री वीरेंद्र गुप्ता, सु. पद्मजा, नासिरा शर्मा, हरजेंद्र चौधरी, रमा पांडे, अमरनाथ वर्मा, शाहीना खान, सतीश आलोक, नरेश शांडिल्य इत्यादि ।

दिव्या माथुर की रिपोर्ट

27वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं अंतरराष्ट्रीय भाषा-साहित्य संगोष्ठी

27-29 अक्टूबर, 2014 को गोवा में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 145वीं जयंती तथा भारत की स्वतंत्रता की 68वीं वर्षगांठ के अवसर पर राष्ट्रीय हिंदी अकादमी, रूपाम्बरा द्वारा आयोजित ***27वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं अंतरराष्ट्रीय भाषा-साहित्य संगोष्ठी*** का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

सम्मेलन का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल पश्चिम बंगाल, डॉ. केशरीनाथ त्रिपाठी, उत्तराखंड के महामहिम राज्यपाल डॉ. अज़ीज़ कुरैशी, कर्नाटक के महामहिम राज्यपाल श्री वी. वाजू भाई वाला एवं गोवा की महामहिम राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्पार्पण कर तथा दीप जलाकर किया।

सम्मेलन में भारत सरकार के मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, निगमों आदि के वरिष्ठ अधिकारियों, राजभाषा अधिकारियों, देश के वरिष्ठ लेखकों, कवियों, भाषाविदों, विद्वानों की सहभागिता रही। इस अवसर पर 12 सरकारी विभागों, उपक्रमों, निगमों, लोकसभा को अंतरराष्ट्रीय अकादमी राजभाषा शील्ड द्वारा सम्मानित किया गया तथा सात साहित्यकारों, माननीय राजनेताओं हिंदी सेवियों को विशिष्ट हिंदी सेवा सम्मान प्रदान किया गया।

कुल सात सत्रों में संपन्न अंतरराष्ट्रीय भाषा संगोष्ठी में भाषाओं के विकास, संवर्धन और आदान-प्रदान की प्रक्रिया को तीव्र गति देने के लिए राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद की आवश्यकता पर बल दिया गया तथा केंद्र एवं राज्यों की अकादमियों को इस दिशा में ठोस कदम उठाने का ज़ोरदार प्रस्ताव रखा गया।

सम्मेलन में लोकसभा सचिवालय, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, गोवा शिपयार्ड लिमिटेड, इंडियन ओवरसीज़ बैंक, निर्यात - आयात बैंक, कैनरा बैंक, भारतीय साधारण जीवन बीमा निगम, विशाखापट्नम् इस्पात संयंत्र, कोल इंडिया लिमिटेड, बैंक आफ बड़ौदा, पावर ग्रिड कार्पोरेशन आफ इंडिया आदि को अंतरराष्ट्रीय अकादमी राजभाषा शील्ड, राजभाषा पत्रिका शील्ड सम्मान द्वारा सम्मानित किया गया। पद्मश्री कविवर सुरेंद्र दुबे, सचिव, राजभाषा आयोग, छत्तीसगढ़, श्री हरिसुमन बिष्ट, सचिव हिंदी अकादमी, दिल्ली, सहित्यकार एवं हिंदी सेवी, प्रशासक माननीय डॉ. केशरीनाथ त्रिपाठी, महामहिम मृदुला सिन्हा, डॉ. अज़ीज़ कुरैशी एवं हिंदी वी. वाजू भाई वाला को विशिष्ट हिंदी सेवा सम्मान द्वारा सम्मानित किया गया। सम्मेलन स्थल पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ शासन तथा गोवा सरकार के सांस्कृतिक विभाग द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जो अत्यंत सराहनीय थे। सम्मेलन का संचालन डॉ. सुधीर शर्मा, निदेशक राष्ट्रीय हिंदी अकादमी ने किया तथा कार्य संयोजन डॉ. संजीव सक्सेना, क्षेत्रीय सचिव, राष्ट्रीय हिंदी अकादमी, दिल्ली एवं श्री एस. बी. प्रभुदेसाई, उपमहाप्रबंधक गोवा शिपयाई ने किया। दूरदर्शन, आकाशवाणी, गोवा के समाचार पत्रों, मीडिया ने व्यापक कवरेज किया। सम्मेलन को सफल बनाने में प्रतिवेदक मेरिना डौराडा ने हर प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की।

सम्मेलन में गोमान्तक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ गोवा का सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर अंत में गोवा शिपयार्ड लि. के उप महाप्रबंधक डॉ. प्रभुदेसाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

राष्ट्रीय हिंदी अकादमी, रूपाम्बारा की रिपोर्ट

अणुव्रत लेखक पुरस्कार से डॉ. बजरंगलाल गुप्ता सम्मानित

4 नवंबर 2014 को अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष उत्कर्ष नैतिक एवं आदर्श लेखन के लिए प्रदत्त किया जाने वाला 'अणुव्रत लेखक पुरस्कार' वर्ष-2014 के लिए प्रख्यात अर्थशास्त्री, समाजसेवी, यशस्वी साहित्यकार डॉ. बजरंगलाल गुप्ता को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में आध्यात्म साधना केन्द्र, मेहरौली में प्रदत्त किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि आर.एम.एस. के सह-कार्यवाहक श्री भैयाजी जोशी, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डालचंद कोठारी, महामंत्री श्री मर्यादा कोठारी, पुरस्कार के प्रायोजक परिवार के श्री चैथमल श्यामसुखा, अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक श्री ललित गर्ग ने डॉ. गुप्ता को सम्मानित किया।

डॉ. गुप्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्र में संचालक हैं। आपकी 'भारत का आर्थिक इतिहास', 'विवेकानन्द के सपनों का भारत' एवं 'हिन्दू अर्थचिंतन' प्रमुख कृतियाँ हैं।

आचार्य श्री महाश्रमण ने डॉ. गुप्ता की नैतिक एवं स्वस्थ लेखन की प्रतिबद्धता की चर्चा की। मुख्य अतिथि भैयाजी जोशी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि सशक्त, समृद्ध एवं सुसंस्कृत राष्ट्र निर्माण में नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण योगदान है। सम्मानित डॉ. गुप्ता ने आयोजकों का आभार करते हुए कहा कि यह पुरस्कार मेरे लिए महान संतपुरुषों का आशीर्वाद है।

इस अवसर पर श्री सुखराज सेठिया ने भैयाजी जोशी का एवं श्री पदमचंद जैन ने डॉ. बजरंगलाल गुप्ता का जीवन-परिचय प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संयोजन श्री ललित गर्ग ने किया। आभार ज्ञापन श्री बाबूलाल दुगड़ ने किया।

श्री ललित गर्ग की रिपोर्ट

डॉ. सुनील कुमार परीट जी को "काव्य कुमुद सम्मान"

ग्वालियर साहित्य कला परिषद, ग्वालियर, म.प्र. के संस्थापक एवं अध्यक्ष श्री रमेश कटारिया 'पारस' जी और समारोह के मुख्य अतिथि, प्रख्यात साहित्यकार श्री राम अवतार जी ने अहिंदी प्रदेश कर्नाटक के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. सुनील कुमर परीट को उनके संपूर्ण व्यक्तित्व, कृतित्व एवं साहित्यिक योगदान के लिए 30 सितंबर 2014 को "काव्य कुमुद सम्मान" प्रदान किया। डॉ. परीट जी दस साल से कर्नटक में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रहे थे।

विशेष संवाददाता

डॉ. जोराम यालाम नाबाम को प्रथम साहित्य मंथन सृजन पुरस्कार प्रदत्त

18 नवंबर, 2014 को अरुणाचल प्रदेश की पहली हिन्दी कथाकार डॉ. जोराम यालाम नाबाम को वर्ष 2013 में प्रकाशित उनकी कथाकृति 'साक्षी है पीपल' के लिए प्रथम 'साहित्य मंथन सृजन पुरस्कार' प्रदान किया गया। 'साहित्य मंथन' के तत्वावधान में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के खैरताबाद स्थित सम्मेलन कक्ष में सम्मान समारोह संपन्न हुआ।

विश्वप्रसिद्ध कला संग्राहक पद्मश्री जगदीश मित्तल ने दीप प्रज्वलन करके कार्यक्रम का विधिवत उद्‌घाटन किया। समारोह की अध्यक्षता अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. एम. वेंकटेश्वर ने की।

डॉ. यालाम को पुरस्कार प्रदान करते हुए 'नानीलु' के प्रवर्तक और साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार प्रतिष्ठित तेलुगु कवि प्रो. एन गोपी ने कहा कि यह मात्र डॉ. यालाम का ही सम्मान नहीं, बल्कि पूर्वोत्तर की हिन्दी रचनाशीलता का सम्मान है। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय से पधारे प्रो. देवराज ने भी अपने उद्‌गार सुनाए और पुरस्कृत लेखिका के प्रयासों की सराहना की।

अवसर पर अरुणाचल प्रदेश के पौराणिक आख्यानों पर आधारित डॉ. जोराम यालाम नाबाम की हिंदी पुस्तक 'तानी मोमेन' (पुरखों की लीलास्थली) के विवेक नाबाम द्वारा किए गए अंग्रेज़ी अनुवाद का लोकार्पण भी किया गया।

समारोह का संचालन डॉ. जी. नीरजा ने किया तथा 'साहित्य मंथन' के संस्थापक डॉ. ऋषभदेव शर्मा ने आभार प्रकट किया।

डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा की रिपोर्ट

श्री चंचल हर्ष की पुस्तकों का विमोचन

बाएँ से: श्री शीन काफ़ निज़ाम, श्री विकास हर्ष, श्री भवानी शंकर व्यास 'विनोद', महंत सोमगिरी महाराज, श्री दुर्गेश बिस्सा, श्री चंचल हर्ष, श्री भवानी शंकर शर्मा व श्री चंद्रेश हर्ष

19 अक्टुबर 2014 को आकाशवाणी बीकानेर के सेवानिवृत जाने-माने उद्‌घोषक एवं वरिष्ठ साहित्यकार, श्री चंचल हर्ष की दो बाल पुस्तकों 'भावों की सरिता' एवं 'खिलती कलियाँ' का विमोचन किया गया।

सभागार में जाने-माने साहित्यकार श्री नन्द किशोर आचार्या सहित संस्कृति कर्मी, रंग कर्मी, पत्रकार, साहित्य रसिक जान मौजूद थे।

श्री सुनील गज्जाणी की रिपोर्ट

डॉ. प्रतिभा माही की नवीनतम कृति 'चन्दा मामा आओ ना' का लोकार्पण

27 सितंबर, 2014 को शब्द शक्ति साहित्यिक संस्था गुड़गाँव के तत्वावधान में हरियाणा साहित्य अकाद्मी के सौजन्य से डॉ. प्रतिभा माही की नवीनतम कृति 'चन्दा मामा आओ ना' का लोकार्पण वरिष्ठ बालसाहित्यकार, 'चन्दा मामा' हिंदी पत्रिका के पूर्व संपादक, डॉ.बालशौरि रेड्डी द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि डॉ. प्रतिभा माही ने बाल-साहित्य का सृजन कर बच्चों की मन:स्तिथि को समझते हुए उन्हें सार्थक दिशा देने का एक सुन्दर प्रयास किया है इसीलिए वे प्रशंसनीय और बधाई की पात्र हैं। श्री घमण्डीलाल अग्रवाल, डॉ. राजेन्द्र परदेसी तथा श्री अशोक शर्मा अक्स जैसे वरिष्ठ साहित्यकारों ने पुस्तक की समीक्षात्मक परिचर्चा तथा कार्यक्रमों में भाग लिया। मंचासीन मुख्य अतिथि बालशौरि रेड्डी जी के साथ विराजमान श्री सतपाल मोहन तथा सुश्री सुषमा भंडारी के सान्निध्य में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता हरियाणा साहित्य सम्मेलन के ज़िला अध्यक्ष श्री फूलचंद सुमन द्वारा की गई जिसमें गुड़गाँव के विभिन्न साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं से साहित्य प्रेमियों को आनंद से सराबोर कर दिया।

इस अवसर पर ग्यारह वरिष्ठ साहित्यकारों एवं वरिष्ठ अतिथियों - डॉ. मंजु पाण्डेय (नैनीताल), डॉ. राजेंद्र परदेसी (लखनऊ), श्री फूलचंद सुमन (गुड़गाँव) एवं श्री सतपाल मोहन (गुड़गाँव) इत्यादि को डॉ. बालशौरि रेड्डी जी के कर कमलों द्वारा डॉ. मनोज कुमार गुप्ता स्मृति सम्मान प्रदान किया गया।

शब्द शक्ति साहित्यिक संस्था गुड़गाँव, हरियाणा की रिपोर्ट

प्रधान संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

संपादन सहयोग
सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी, श्रीमती विजया सरजु, श्रीमती उषा राम, सुश्री खुश्बू चुड़ामन, सुश्री करिश्मा रामझितन

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड 74427, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius
Phone: (230) 676 1196
Fax: (230) 676 1224
Email: info@vishwahindi.com
Website: www.vishwahindi.com
Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul – Pailles
Tel: (230) 208 1317

अंतरराष्ट्रीय हिंदी लघुकथा प्रतियोगिता के परिणाम

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2015 के उपलक्ष्य में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी लघुकथा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। परिणामों की घोषणा 10 जनवरी, 2015 को विश्व हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर की गई। पाँच भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर प्रतियोगिता की पाँच श्रेणियाँ नियत की गई थीं। प्रस्तुत हैं 5 भौगोलिक क्षेत्रों के परिणाम :

भौगोलिक क्षेत्र 1: अफ़्रीका व मध्य पूर्व

प्रथम पुरस्कार	श्री राज हीरामन	मॉरीशस
प्रथम पुरस्कार	श्री कुमारदत्त गुदारी	मॉरीशस
द्वितीय पुरस्कार	डॉ. अलका धनपत	मॉरीशस
द्वितीय पुरस्कार	श्री वशिष्ठ कुमार झमन	मॉरीशस
द्वितीय पुरस्कार	श्री अरविंदसिंह नेकितसिंह	मॉरीशस

भौगोलिक क्षेत्र 2: अमेरिका

प्रथम पुरस्कार	रीनू पुरोहित	कनाडा
द्वितीय पुरस्कार	कविता मालवीय	सूरीनाम
तृतीय पुरस्कार	अशोक ओझा	न्यू जर्सी

भौगोलिक क्षेत्र 3: एशिया व ऑसट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त)

प्रथम पुरस्कार	आरती शर्मा	न्यू ज़ीलैंड
द्वितीय पुरस्कार	रिद्मा निशादिनी लंसकारा	श्री लंका
तृतीय पुरस्कार	आद्या शुक्ला	इंडोनेशिया
तृतीय पुरस्कार	प्रगीत कुँवर	सिडनी

भौगोलिक क्षेत्र 4: यूरोप

प्रथम पुरस्कार	दीपक कुमार चौरसिया	पेरिस
द्वितीय पुरस्कार	उषा वर्मा	यॉर्क
तृतीय पुरस्कार	प्राण शर्मा	यू.के.

भौगोलिक क्षेत्र 5: भारत

प्रथम पुरस्कार	हेमा चंदानी 'अंजुलि'	मुंबई
द्वितीय पुरस्कार	रेणुका बर्थवाल	राजस्थान
तृतीय पुरस्कार	डॉ. पल्लवी प्रकाश	हरियाणा

अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन, मॉरीशस पारित संकल्प

1. "प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार : अंतरराष्ट्रीय सहयोग व संभावनाएँ" विषय पर भारतीय उच्चायोग एवं विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, कला एवं संस्कृति मंत्रालय, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस की हिंदी-सेवी संस्थाओं, यथा – हिंदी प्रचारिणी सभा, हिंदी संगठन,आर्य सभा मॉरीशस, सरकारी हिंदी शिक्षक संघ आदि के सहयोग से 29 अक्टूबर 2014 से 1 नवंबर 2014 के दौरान एक चार दिवसीय अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया।

2. सममेलन का आयोजन जोहान्सबर्ग में संपन्न हुए 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन के मंतव्य संख्या 4viii के कार्यान्वयन स्वरूप किया गया ताकि उस प्रस्ताव की भावना के अनुरूप प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण पर गहनता के साथ विचार-विमर्श किया जा सके तथा उन देशों में हिंदी के प्रसार में आने वाली कठिनाइयों का हल ढूँढने का प्रयास किया जा सके।

3. जोहान्सबर्ग विश्व हिंदी सम्मेलन के उपर्युक्त मंतव्य के क्रियान्वयन के अलावा इस सम्मेलन का लक्ष्य विशेष रूप से प्रवासी देशों में हिंदी की समग्र स्थिति का आकलन करना तथा प्रवासी देशों के बीच साझी कार्रवाई की संभावनाओं की तलाश करते हुए उन देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार में संलग्न संस्थाओं के बीच बेहतर समन्वय व सहयोग के लिए मार्ग प्रशस्त करना भी रहा।

4. चार दिनों तक चले इस सम्मेलन का उद्‌घाटन 600 से अधिक हिंदी प्रेमियों की मौजूदगी में 29 अक्टूबर को मॉरीशस गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति श्री कैलाश प्रयाग जी द्वारा गणराज्य के कई मंत्रियों एवं देश, विदेश से पधारे गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में किया गया। यह सम्मेलन उन सब महानुभावों की उपस्थिति के लिए अपना आभार और धन्यवाद व्यक्त करता है।

5. यह सम्मेलन अपना धन्यवाद और अपना आभार व्यक्त करना चाहता है – मॉरीशस और भारत की सरकारों का, विश्व हिंदी सचिवालय तथा महात्मा गांधी संस्थान का, मॉरीशस की समस्त हिंदी सेवी संस्थाओं, विशेष रूप से हिंदी प्रचारिणी सभा, हिंदी संगठन, आर्य सभा मॉरीशस, आदि का जिनके कारण आयोजन संभव हो पाया; सम्मेलन आभार और धन्यवाद व्यक्त करता है सम्मेलन केलि बनी उन सभी समितियों, यथा- संचालन समिति, शैक्षिक समिति, स्वागत एवं जनसंपर्क समिति, संभार समिति, वित्त समिति का जिनके सक्षम मार्गदर्शन में सम्मेलन की गतिविधियाँ संभव हो पाईं।

6. इसी प्रकार, 30 एवं 31 अक्टूबर को संपन्न शैक्षिक सत्रों तथा 1 नवंबर 2014 को संपन्न गोलमेज़ बैठक में लगभग 200 विद्वानों ने, जिसमें 30 प्रवासी देशों के विद्वान भी शामिल थए, प्रत्यक्ष अथवा वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग के ज़रिए बहुत उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह सम्मेलन उन समस्त विद्वानों तथा प्रतिभागियों के समर्पित योगदान के लिए आभार व्यक्त करता है।

7. सम्मेलन यह महसूस करता है कि प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण तथा प्रचार-प्रसार की दृष्टि से इस सम्मेलन की कार्यवाही का बहुत महत्व है। अत: सम्मेलन विश्व हिंदी सचिवालय से यह अनुरोध करता है कि इसकी कार्यवाही को पुस्तक के रूप में अथवा पत्रिका के विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाए।

8. 30 एवं 31 अक्टूबर को संपन्न शैक्षिक सत्रों में हुई प्रतुतियों के आधार पर 1 नवंबर 2014 को विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे विद्वानों की उपस्थिति में संपन्न हुए गोलमेज़ बैठक के उपरान्त अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन द्वारा सर्वसम्मति से अगले विश्व हिंदी सम्मेलन के विचार के लिए निम्नलिखित मुद्दों पर कतिपय संकल्प पारित किए गए, जो इस प्रकार हैं:

i. प्रवासी देशों में हिंदी-शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार की अपनी विशिष्ट समस्याएँ हैं। सम्मेलन भारत सरकार से यह अनुरोध करता है कि उन देशों में हिंदी-शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार की विशिष्ट समस्याओं के हल के लिए भारत किसी एक संस्था को, जो विदेशों में हिंदी के शिक्षण में संलग्न हो, नोडल संस्था घोषित किया जाए या उसके लिए विदेश मंत्रालय में कोई एकल संपर्क कोष्ठ बनाया जाए जो प्रवासी देशों में हिंदी-शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़े अनुरोध को कार्यान्वयन के लिए सही संस्था को सौंपे।

ii. प्रवासी देशों में मॉरीशस के हिंदी-शिक्षण के अनुकरणीय मॉडल की यह सम्मेलन प्रशंसा करता है। मॉरीशस के हिंदी-शिक्षण के इस मॉडल का लाभ विश्व के अन्य देशों को मिले, इसके लिए सम्मेलन यह सिफ़ारिश करता है कि मॉरीशस स्थित महात्मा गांधी संस्थान में विश्व हिंदी सचिवालय की वित्तीय सहायता से तथा संबंधित निकायों की सहभागिता से हिंदी-शिक्षण का एक प्रकोष्ठ तैयार किया जाए जिसमें विभिन्न गिरमिटिया देशों के विद्वानों की भी जहाँ तक संभव हो सके, सलाह ली जाए।

iii. गिरमिटिया प्रवासी देशों व नवप्रवासी देशों के छात्रों को पूर्वजीय भाषा के रूप में हिंदी सिखलाने के लिए भारत सरकार द्वारा विशेष हिंदी शिक्षण की व्यवस्था की जाए। अर्थात उनके लिए विशेष पाठ्यक्रम आदि तैयार करने की संभावनाओं का पता लगाए तथा गिरमिटिया प्रवासी देशों के छात्रों के लिए अलग से छात्रवृत्तियों का प्रावधान किया जाए।

iv. प्रवासी देशों में हिंदी भाषा की देशीय विशेषताओं का हिंदी भाषा के वैश्विक स्वरूप के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। इस भाषिक विविधता के संरक्षण हेतु भारत सरकार संबंधित संस्थानों/निकायों/विद्वानों आदि की सहायता से हिंदी का एक ऐसा शब्दकोश तैयार करे जिसमें प्रवासी देशों की हिंदी के विशेष शब्दों को स्थान मिले, उनका प्रलेखीकरण हो।

v. सम्मेलन यह इच्छा व्यक्त करता है कि मॉरीशस का यह अंतरराष्ट्रीय (क्षेत्रीय) हिंदी सम्मेलन प्रत्येक तीन वर्षों में मॉरीशस में एक बार आयोजित हो।

सम्मेलन की समाप्ति मॉरीशस के आतिथ्य को हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ-साथ आप्रवासी भारतीयों की उस स्मृति को नमन करने के साथ हुई जिनकी दुनिया भर में फैली संतानें विश्व के विकास में अपना गौरवपूर्ण योगदान दे रही है।

1 नवंबर, 2014

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस